ادعیه
سنسکرت

406

भजन

टेक — मोहनी छवि है प्रभुजी मुझको भाती आपकी =
ज्ञानदर्शनकी अवस्था याद आती आपकी ॥
धन्य हैं ये नेत्र मेरे धन्य घड़ी शुभ आजी दिन =
सब दूर संशय होगया अब प्रतिमा आपकी ॥१ मो॥
नाशा दृष्टि शांत मुद्रा पद्म आसन मन हरन =
कर्म आठों देख भाजे ध्यान ध्यान अवस्था आपकी ॥२॥ मो॰
तुमको जो ध्यावे प्रभुजी शुद्ध करके मन वचन =
नाव उसकी पार होवे ऐसी महिमा आपकी ॥ मो: ॥३॥
दास की अरदास यह है मेटदो आवागमन = हे प्रभु
इस दास पर अब मेहर वानी आपकी --
मोहनी छवि है प्रभुजी मुझको भाती आपकी
ज्ञानदर्शन की अवस्था याद आती आपकी ॥[illegible]॥

समाप्त

शठमुखकर श्याम।। नमों मेरु सम पारसस्वाम
।।२३।। भवसागर तें जीव अपार धरमपोत में धरे
निहार ।। डूबत काढ़े दया विचार वर्धमान वंदौ
बहुवार ।।२४।।

दोहा– चौवीसों पद कमलजुग वंदौं मनवच
काय द्यानत पढ़ै सुनै सदा सो प्रभु क्यों न सहाय

(अथ स्वयंभूस्तोत्र)

कामदेव द्वादशमममनोग थाँतिकरणासोलम जिनरा
य-शांतिनाथ वंदो हररवाय ॥१६॥ कुपीव करै
हरष नहीं होय निंदे दोष गहै नहीं कोय। शीलवान
परब्रह्मस्वरूप वंदो कुंपनाथ शिवभूप ॥१७॥ द्वा
दश गरा पूजें सुखदाय थुति वन्दना करै अधिकाय॥
जाकी निजथुति कबहु न होय वंदो अर जिनवरपद
दोय॥१८॥ परभव रत्नत्रय अनु राग इहभव व्याह
समय अनुराग॥ बालब्रह्म पूरन व्रत धार वंदो मल्लि
नाथ जिनसार ॥१९॥ बिन उपदेश स्वयं वैराग
थुति लौकांत करैं पगपाल नमः सिद्ध कहि सब
व्रत लेहिं वंदो मुनिसुव्रत व्रत देहिं।२०॥ श्रावक
विद्यावंत निहार भगतिभावसों दियो अहार -
बरसैं रत्नराशि तत्काल वन्दों नमि प्रभु दीनदयाल
॥२१॥ सब जीवन की बंदि छोर राग द्वेष दो बंधन
तोर रज मीत तीज शिवौ तपसों मिले नेमि
नाथ वंदो सुख निले ॥२२॥ दैत्यो कियो उपसर्ग
अपार ध्यान देखि आयो फीन धार॥ गयो कमठ

नमों चन्द्रप्रभु राख समीप ॥८॥ द्वादस विधि तप क-
रम विनाश तेरह भेद चारित परकाश ॥ निज अनिच्छ
भवि इच्छक दान वंदौं पुष्पदंत मनआन ॥९॥ भवि-
सुखदाय सुरगतैं आय दशविधि धरम कह्यो जिनराय
आपसमान सबनि सुखदेह वंदौं शीतल धर्मसनेह ॥१०॥
समतासुधा कोपविषनाश - द्वादशांग वानी परकाश
चार संघ आनंद दातार नमों श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥
११॥ रत्नत्रय चिर मुकुट विशाल सोभै कंठ सुगुण म-
णिमाल मुक्ति नार भरता भगवान वासपूज्य वंदौं
धर ध्यान ॥१२॥ परमसमाधिरूप जिनेश ज्ञानी-
ध्यानी हित उपदेश कर्म नाशि शिवसुख विलसंत
वंदौं विमल नाथ भगवंत ॥१३॥ अंतर बाहिर
परिग्रह डारि परमदिगम्बर व्रतको धार सर्व जीव
हित राह दिखाय नमों अनंत वचन मन काय ॥१४॥
सात तत्व पंचास्तिकाय अरथ नमों छह दरब-
बहुभाय लोक अलोक सकल परकाश वंदौं धर्म
नाथ अविनाश ॥१५॥ पंचम चक्रवर्ति निधिभोग ॥

अथ स्वयंभूस्तोत्र

राजविषय जुगलनि सुख कियो। राज त्याग-
भवि शिव पद दियो स्वयं बोध स्वयंभू भगवान-
वंदौं आदिनाथ गुणखान ॥१॥ इंद्र क्षीर सागर ज-
ल लाय मेरु न्हवाये गाय बजाय मदनविनाशक सुख
करतार वन्दौं अजित अजित पदकार ॥२॥ शुक्ल ध्यानकर
करमविनाश। घाति अघाति सकल दुखराशि लह्यो
मुकति पद सुख अविकार वंदौं संभव भव दुख टार ॥३॥
माता पच्छिम रयन मंझार। सुपने सोलह देखे सार ॥
भूप पूछि फल सुनि हरषाय। वंदौं अभिनंदन मन
लाय ॥४॥ सब कुवाद वादी सरदार जीते स्याद्वाद धु-
नि धार। जैनधरम परकाशक स्वाम सुमतिदेव पद करहुँ
प्रनाम ॥५॥ गर्भ अगाऊ धनपति आय। करि नग शोभा अ-
धिकाय बरसे रतन पंचदश मास नमौं पदमप्रभ सुखकी
रास ॥६॥ इन्द्र फनिन्द्र नरिंद्र त्रिकाल- बानी सुनसुन
होहिं खुस्याल द्वादस सभा ज्ञान दातार- नमौं सुपारस-
नाथ निहार ॥७॥ सुगुण छियालिस हैं तुममाहिं
दोष अठारह कोऊ नाहिं मोह महातम नाशक दीप

क्षमा० चारित्रजुखरो॥१९॥तातैंशिवपुरपइयेसही।रत्नत्रयकी
विधियहकही।रत्नत्रयपूरेह्नोजाँय।क्षमाक्षमाकरियो
१२ तुमभाय॥२०॥चैत्रमाघभादवत्रयवार।करियोजेगरत्न
त्रयसार।एकवरषमेंतीनमुवार।नरभवसफलक्षमाउ
रधार॥२१॥दोहा।क्षमावणीयहआरती।पढैसुनैजोको
य।कहैमल्लसरधाकरो।मुक्तिश्रीफलहोय॥२२॥सोर
ठा॥दोषनगह्यियेकोय।गुणगहपढियोभावसों।भूल।
चूकजोहोय।अर्थबिचारकैसोधियो॥२३॥इतिपूर्णार्घं

॥इति क्षमावणीपूजन समाप्तम्॥

जै। तेरहविधिधरशिवसुखलीजै। छहकायाकीरक्षा-
करहैं। सोअहिंसाव्रतचितधरहैं॥११॥हितमितसत्यब
चनमुखकहिये। सोसतवादीकेवललहिये। मनबचा-
कायनचोरीकरिहैं। सोअचौर्यव्रतचितधरिहैं॥१२॥म
नमथभयरंचनआनै। सोब्रह्मचर्यव्रतमुनिठानै। परि
ग्रहदेखनमूर्छितहोई। पंचमहाव्रतकहियेसोई॥१३॥म
हाव्रतयहपांचोंखरे। तबश्रीआदिजिनेश्वरवरे। मनमें
विकलपरंचनहोई। मनोगुप्तिमुनिकहियेसोई॥१४॥ब
चनअलीकमुखरंचनकहै। बचनगुप्तिमुनिशिवसुख
लहै। कायोत्सर्गपरीषहसहै। सोमुनिकायगुप्तिजिनक
है॥१५॥पांचसमितिअबसुनियेभाई। अरथसहितभा
खेंजिनराई। हाथच्यारबहुभूमिनिहारे। तबमुनिईर्यास
हितपगधारे॥१६॥मिष्टबचनमुखबोलेसही। भाषासमि
तिजिनेश्वरकही। भोजनछयालिसदूषणटारै। सोमुनि
एषणशुद्धिविचारै॥१७॥देखकेपोथीलेअरुधरै। सोआ
दाननिक्षेपणवरै। मलमूत्रणकोंतजुडारै। सोपरथापन
सुमतिजुधारै॥१८॥एसबउनतीसअंगजुभए। श्रीजिनभा
खेगणधरकहे। आठआठतेरहविधिधरो। दर्शनज्ञान

[illegible] १
[illegible] २
[illegible] ३
[illegible] ४
[illegible] ५
[illegible] ६
वोत अध्य ७
[illegible] ८
[illegible] अजाय १
[illegible] अजाय (अमाग है) २
[illegible] अजाय ३
कौलावयन अजय ४
उपदेशायन अंजाय ५
विनय अजाय ६
न ला कनी
गुरु [illegible] अजायको ७
गुरु विनय अंजाय नमः